हंसता हुआ धर्म

एक दिन सुबह मुल्ला नसरुद्दीन को घर के बाहर बैठे देखा। खिलखिलाकर हंस रहा है। बड़ा ही आनंदित, आल्हादित है। मैंने पूछा कि क्या हुआ नसरुद्दीन? ऐसे खुश तुम कभी दिखाई नहीं पड़े! उसने कहा, गजब हो गया। पर तुम समझ न सकोगे, जब तक मैं पूरी कथा न कहूं। तो मैंने कहा, तुम पूरी कथा ही कहो। उसने कहा, हम दो भाई थे। जुड़वां पैदा हुए। एक सी शक्लें थीं। कोई भी फर्क न कर पाता था कि कौन कौन है। और जिंदगी भर मैं नुकसान में रहा। स्कूल में मेरा भाई किसी को पत्थर मार देता, सजा मुझे मिलती। वह चोरी कर लेता, पकड़ा मैं जाता। घर में भी यह हालत थी। उपद्रव वह करके आता, मोहल्ले में लोग मुझे पकड़ कर ले आते। और आखिरी तो उपद्रव तब हुआ कि एक लड़की से मेरा प्रेम था, वह उसको लेकर भाग गया।

तो मैंने कहा, इसमें तुम इतने प्रसन्न क्यों हो रहे हो? नसरुद्दीन ने कहा कि लेकिन सात दिन पहले सब हिसाब-किताब चुकता हो गया। मैं मर गया और लोगों ने उसको दफना दिया।

मुल्ला नसरुद्दीन ने एक युवती से विवाह का प्रस्ताव किया। प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया। तो उसने खुशी में डुबकी लेकर पूछा, क्या तुम्हारे माता-पिता को पता है कि मैं कवि हूं, शायर? युवती ने कहा, नहीं अभी तक नहीं। मैंने उनसे चोरी के अपराध में तुम्हारी जेल-यात्रा के संबंध में जरूर बताया है। यह भी कि तुम्हें जुआ खेलने की आदत है, और यह भी कि शराब की लत है। लेकिन तुम कवि भी हो, यह मैंने नहीं कहा; सोचा सभी बातें एक साथ बताना ठीक नहीं। धीरे-धीरे बताएंगे।

मुल्ला नसरुद्दीन एक लखपति बाप की बेटी के प्रेम में था और कहता था : चाहे जीवन रहे कि जाए, तुझे नहीं छोड़ सकता। मरने को तैयार हूं, अगर उसकी भी जरूरत हो, शहीद हो सकता हूं, लेकिन तुझे नहीं छोड़ सकता। बड़ी बातें करता था।

एक दिन लड़की बड़ी उदास थी और उसने नसरुद्दीन से कहा कि सुनो, मेरे पिता का दिवाला निकल गया!

नसरुद्दीन ने कहा, मुझे पहले से ही पता था कि तेरा बाप जरूर कोई न कोई गड़बड़ खड़ी करेगा और हमारा विवाह न होने देगा।

मुल्ला नसरुद्दीन बीमार था। पत्नी ने खबर की तो मैं उसके घर गया। भारी बेहोशी में, बुखार तेज था। लगता था एक सौ पांच, एक सौ छह डिग्री बुखार होगा। बिलकुल बेहोश पड़ा है। आग से जल रहा है। मैंने पूछा, कब से यह दशा है? पत्नी ने कहा, अभी-अभी कोई घड़ी भर से। मुल्ला नसरुद्दीन के मुंह में, मैंने कहा, थर्मामीटर लगा कर देखो। मुंह में थर्मामीटर लगाया। और उस बेहोश अवस्था में भी उसने क्या कहा! उसने कहा, माचिस प्लीज़!

मुल्ला नसरुद्दीन का तकियाकलाम था कि इससे बुरा भी हो सकता था। वह जब भी कोई बात करता, या कोई कुछ कहता, तो वह यही कहता कि इससे बुरा भी हो सकता था। लोग थक गए थे। ऐसी कोई बात ही नहीं थी जिसमें वह यह न कहे कि इससे भी बुरा हो सकता था। आखिर एक दिन एक ऐसी घटना घट गई मोहल्ले में कि लोगों ने कहा कि अब इसको फंसा दो। अब यह न कह पाएगा तकियाकलाम।

ऐसा हुआ कि मुल्ला नसरुद्दीन का पड़ोसी बाहर गया था और दो दिन पहले लौट आया। अचानक घर पहुंच गया, पाया कि घर में एक अजनबी आदमी है, पत्नी उसके प्रेम में है। उसने उठाई बंदूक, और दोनों की हत्या कर दी। मुल्ला नसरुद्दीन सुबह निकला था घर से, पड़ोस के लोगों ने घेर लिया कि नसरुद्दीन, सुनो, अब तुम्हारे तकियाकलाम का कोई उपाय न रहा। दोनों मर गए! मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा, इससे भी बुरा हो सकता था। लोग चकित हुए। उन्होंने कहा, इससे भी बुरा क्या हो सकता था? नसरुद्दीन ने कहा, अगर वह एक दिन पहले लौट आया होता तो मैं मरा होता।

एक संध्या ऐसा हुआ कि मुल्ला नसरुद्दीन और उसके दो मित्र भागे ट्रेन पकड़ने को। नसरुद्दीन चूक गया; पैर फिसल गया, गिर गया। दो चढ़ गए। स्टेशन मास्टर ने आकर उसे उठाया और कहा कि नसरुद्दीन दुख की बात है कि तुम चूक गए! नसरुद्दीन ने कहा, मेरे लिए दुखी मत हो। वे दो जो चढ़ गए हैं, मुझे पहुंचाने आए थे। मैं तो दूसरी ट्रेन भी पकड़ लूंगा, उनका क्या होगा?

मुल्ला नसरुद्दीन अपने बेटे को मार रहा था। और कह रहा था—तेरे सुधार के लिए। और कह रहा था कि देख, एक तू है कि रोज दिन में दो बार तुझे न पीटूं तो कोई रास्ता नहीं निकलता; और एक मैं भी था अपने बचपन में कि मेरे बाप ने मुझे कभी नहीं मारा। उसके लड़के ने उसकी तरफ देखते हुए कहा, इससे सिद्ध होता है कि तुम्हारे बाप भले आदमी रहे होंगे।

(ओशो पुस्तकों से संकलित)